दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010

प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य निर्देश-पुस्तिका

क्रमांक	सत्रीय कार्य कोड	कहाँ प्रेषित करें	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर सत्रीय कार्य पहुँचने की निर्धारित अन्तिम दिनांक
01.	एम ए एच डी – 01	सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर	31.03.2019
02.	एम ए एच डी – 02		
03.	एम ए एच डी – 03		
04.	एम ए एच डी – 04		
05.	एम ए एच डी – 05		
06.	एम ए एच डी – 06		

- अध्ययन केन्द्र पर पंजीकृत विद्यार्थी अपने-अपने सत्रीय कार्य अध्ययन केन्द्र पर ही जमा कराएँ। ऐसे विद्यार्थियों के सत्रीय कार्य का मूल्यांकनसम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर ही किया जाएगा।

❯

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

पुरन्दरदास
पाठ्यक्रम संयोजक

दिनांक : 14.11.2018

दूर शिक्षा निदेशालय

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य
दिशा-निर्देश

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर की 06 पाठ्यचर्याओं में से विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं तथा पंचम (वैकल्पिक) पाठ्यचर्याओं के निर्धारित 02 विकल्पों में से किसी 01 पाठ्यचर्या का चयन करना है। विद्यार्थी को प्रथम 04 अनिवार्य पाठ्यचर्याओं तथा पंचम वैकल्पिक पाठ्यचर्या (विद्यार्थी द्वारा चयनित) में प्रत्येक में 01–01 अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य सम्पूर्ण कर जमा कराना अनिवार्य है। इस प्रकार विद्यार्थी को प्रथम वर्ष के प्रथम सेमेस्टर में कुल 05 सत्रीय कार्य सम्पन्न कर जमा कराने हैं।

सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी को उसी पाठ्यचर्या का प्रश्नपत्र हल करने के लिए दिया जाएगा जिस वैकल्पिक पाठ्यचर्या का चयन विद्यार्थी द्वारा सत्रीय कार्य हेतु पंचम पाठ्यचर्या के लिए किया जाएगा। विद्यार्थियों से आग्रह है कि वे परीक्षा आवेदन पत्र में अपने द्वारा पंचम पाठ्यचर्या के लिए चयनित वैकल्पिक पाठयचर्या का क्रमांक, शीर्षक एवं कोड स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करें। यथा - **लोक-साहित्य** पाठ्यचर्या के लिए विकल्प – 02, पाठ्यचर्या का शीर्षक – लोक-साहित्य, पाठ्यचर्या कोड – MAHD – 06 लिखिए।

प्रत्येक सत्रीय कार्य में विद्यार्थी को कुल 03 प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं। प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखना है।

पूर्ण किये गए सत्रीय कार्यों को मूल्यांकन हेतु निर्धारित अंतिमदिनांक से पूर्व सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र पर जमा कराएँ तथा उनकी एक छायाप्रति अपने पास अनिवार्यतः सुरक्षित रखें।

*****

सत्रीय कार्य का उद्देश्य :-

सत्रीय कार्य का उद्देश्य विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थी को उपलब्ध करायी गई पाठ्य-सामग्री को विद्यार्थी की हस्तलिपि में पुनः प्राप्त करना नहीं है अपितु विद्यार्थी की अध्ययन-प्रवृत्ति में निरन्तरता बनाए रखने के साथ ही उसके द्वारा अब तक किए गए अध्ययन का मूल्यांकन करना है। विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों तथा सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को कितना पढ़ा-समझा है, उसका विवेचन-विश्लेषण करने की कितनी क्षमता अर्जित की है तथा सम्बन्धित पाठ्य के विषय में उसका अपना दृष्टिकोण कितना विकसित हुआ है ! आदि उद्देश्यों को दृष्टि में रखने के साथ-साथ विद्यार्थी की लेखन-क्षमता का मूल्यांकन करना भी सत्रीय कार्य का लक्ष्य है । विद्यार्थियों को सत्रीय कार्यों में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखते समय उपर्युक्त उद्देश्यों को स्मरण रखना चाहिए तथा प्राप्त पाठ्य-सामग्री का पुनर्प्रस्तुतीकरण न करते हुए अध्ययन उपरान्त अपनी विकसित विचार-क्षमता के आधार पर ही उत्तर लिखने का प्रयास करना चाहिए । पूछे गए प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थी का अध्ययन, उसकी आलोचनात्मक दृष्टि, पाठ्य के विषय में उसकी अपनी समझ आदि के साथ ही भाषा एवं वर्तनी सम्बन्धी ज्ञान की अपेक्षा की जाती है । उपर्युक्त अपेक्षाओं को दृष्टि में रखकर ही विद्यार्थी द्वारा प्रेषित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन किया जाएगा।

सत्रीय कार्य लेखन :-

विद्यार्थी सत्रीय कार्य लिखने से पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें :-

01. योजना :- प्रथमतः सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों को पढ़कर उनका आशय समझ लीजिए । तदनन्तर सम्बन्धित पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़िए । पूछे गए प्रश्नों से सम्बन्धित इकाइयों को मनोयोग से पढ़िए । निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों का गहन अध्ययन कीजिए । साथ ही, सुझायी गई सहायक पुस्तकों को भी रुचिपूर्वक पढ़िए । पढ़ते समय प्रत्येक उत्तर से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य चिह्नित कर लीजिए और अन्तिम प्रति तैयार करने से पूर्व उन्हें तार्किक क्रम में व्यवस्थित कर लीजिए।
02. संगठन कौशल :- अपने उत्तर को अन्तिम रूप देने से पूर्व एक कच्ची रूपरेखा बना लीजिए, श्रेष्ठतम तथ्य संकलित करने का प्रयास कीजिए और उसके समुचित विवेचन-विश्लेषण हेतु चिन्तन कीजिए। उत्तर लिखते समय प्रस्तावना और समाहार पर विशेष ध्यान दीजिए । कृपया ध्यान रखिए कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तर्कसंगत हों, वाक्य-विन्यास और वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ न हों, अनुच्छेदों में परस्पर तारतम्यता हो तथा भाव, शैली और प्रस्तुति का पर्याप्त संयोजन किया गया हो।
03. सत्रीय कार्य लेखन :- सत्रीय कार्य विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में सम्पन्न किया जाना है । पूछे गए प्रश्नों की अन्तिम प्रति स्वच्छ, स्पष्ट, पठनीय अक्षरों में लिखित, वर्तनी सम्बन्धी दोषों से रहित, प्रारूपबद्ध और बिना काट-छाँट किए तथा भली प्रकार नत्थी/स्पाइरल बाइंडिंग की गई हो । आवश्यकता प्रतीत होने पर मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है । उत्तर-पुस्तिका में केवल नीले अथवा काले रंग की स्याही वाले पेन अथवा बॉलपेन का ही प्रयोग कीजिए । उत्तर-

पुस्तिका में प्रश्नों के उत्तर पूछे गए प्रश्नों के क्रमानुसार ही लिखिए । किसी भी प्रश्न का उत्तर लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व सम्बन्धित प्रश्न क्रमांक अवश्य लिखिए। प्रत्येक नए उत्तर का प्रारम्भ नए पृष्ठ से कीजिए । उत्तर-पुस्तिका हेतु A–4 साइज़ के कागज़ों का प्रयोग करें । कार्य सम्पन्नोपरान्त सभी कागज़ों को भली प्रकार नत्थी कर लीजिए । विद्यार्थियों को सलाह दी जाती है कि अपनी उत्तर-पुस्तिका की सुरक्षित प्रस्तुति हेतु वे समस्त कागज़ों को स्पाइरल बाइंडिंग करा लें। विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार गुणवत्तापूर्ण कागज़ के बड़े आकार के जिल्दबंद रजिस्टर में भी सत्रीय कार्य प्रस्तुत कर सकते हैं। सत्रीय कार्य के अन्तिम पृष्ठ पर कुल पृष्ठ संख्या लिखकर अपने हस्ताक्षर कीजिए। सत्रीय कार्य की विद्यार्थी द्वारा स्वयं की हस्तलिपि में लिखित प्रति ही स्वीकार की जाएगी । आवश्यकता प्रतीत होने पर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत सत्रीय कार्य में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में लिखित हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) का मिलान करवाया जाएगा। दोनों की हस्तलिपि (हेंड राइटिंग) में भिन्नता पाए जाने पर ऐसे सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा। सत्रीय कार्य की कंप्यूटर टंकित प्रति अस्वीकार्य है। कंप्यूटर टंकित सत्रीय कार्यों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण :

सत्रीय कार्य प्रस्तुतीकरण से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :--

01. सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ के प्रारूप हेतु परिशिष्ट क्रमांक - 01 देखिए।
02. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के शीर्षभाग पर सर्वोपरि दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का नाम एवं पूर्ण पता लिखिए।
03. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर विश्वविद्यालय के नाम और पते के नीचे पाठ्यक्रम का नाम : एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010, सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक, सत्रीय कार्य कोड, पाठ्यचर्या क्रमांक तथा पाठ्यचर्या का शीर्षक लिखिए।
04. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के मध्यभाग में अपना पूरा नाम (कृपया नाम के पहले श्रीमती/कुमारी/सुश्री/श्री/डॉ० न लिखें), अनुक्रमांक, नामांकन संख्या, पत्राचार पता (पिन कोड सहित) तथा मोबाइल नं. लिखिए।
05. उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के निम्नभाग में सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता लिखिए तथा स्थान एवं दिनांक अंकित करते हुए अपने हस्ताक्षर अवश्य कीजिए। अहस्ताक्षरित प्रति अस्वीकार्य है।
06. सत्रीय कार्य उत्तरपुस्तिका को जाँच हेतु सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र के पते पर जमा करा दीजिये । लिफ़ाफ़े के शीर्ष पर **सत्रीय कार्य, एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010** अवश्य लिखिए।

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम **प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर**

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – I

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 01 **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 01

पाठ्यचर्या का शीर्षक : प्रारम्भिक हिन्दी काव्य

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. अपभ्रंश-प्रभावित एवं अपभ्रंश -प्रभाव से मुक्त हिन्दी रचनाओं की पड़ताल कीजिए और उनके मध्य भेद को रेखांकित करते हुए एक आलोचनात्मक आलेख तैयार कीजिए।
2. आचार्य शुक्ल ने जिन रचनाओं के आधार पर आदिकाल का नाम वीरगाथाकाल रखा है उन रचनाओं की परिचयात्मक विवेचना कीजिए।
3. विद्यापति विरचित किन्हीं पाँच भक्ति विषयक पद और किन्हीं पाँच शृंगार विषयक पदों की ससंदर्भ भावपूर्ण व्याख्या कीजिए। पद में निहित वैशिष्ट्य को भी यथास्थान उद्घाटित कीजिए।
4. अमीर ख़ुसरो की हिन्दी रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी साहित्यिक विशिष्टताओं को उजागर कीजिए।
5. समग्र आदिकालीन साहित्य को विभिन्न वर्गों में व्यवस्थित करते हुए एक विश्लेषणात्मक आलेख लिखिए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – II

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 02 **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 02

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी उपन्यास एवं कहानी

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. प्रेमचंद-साहित्य में अभिव्यक्त तत्युगीन सामाजिक स्थितियों को रेखांकित कीजिए।
2. प्रेम-दर्शन और स्त्री-दृष्टि के सन्दर्भ में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों पर एक सारगर्भित आलेख लिखिए।
3. हिन्दी की पहली कहानी कौन-सी है ? इस सम्बन्ध में किन कहानियों का नाम लिया जाता है ? विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए तर्कसहित अपना मत प्रकट कीजिए।
4. नयी कहानी के बाद उसके विकास-क्रम में अनेक आन्दोलन हुए हैं। विभिन्न कहानी आन्दोलनों एवं उनकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए।
5. 'साम्प्रदायिकता, देश-विभाजन की त्रासदी और हिन्दी कहानी' शीर्षक पर एक आलेख लिखिए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम   प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – III

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 03   **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 03

पाठ्यचर्या का शीर्षक : भारतीय काव्यशास्त्र

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. काव्यशास्त्र के अन्वेषणयुगीन आचार्यों के मतों एवं उपलब्धियों का परिचयात्मक विवेचन कीजिए।
2. काव्य के कितने प्रकार माने गए हैं ? आरेख बनाकर विविध रूपों का विश्लेषण कीजिए।
3. रस-निष्पत्ति की विस्तृत विवेचना कीजिए।
4. काव्य की आत्मा किसे माना जाए ? विभिन्न आचार्यों द्वारा अधिगत दृष्टि-बिन्दुओं से उदित विविध काव्य-सिद्धान्तों के मतों का अनुशीलन कीजिए।
5. काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के इतिहास एवं विकास को समझाते हुए उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – IV

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 04 **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ पाठ्यचर्या (अनिवार्य)

पाठ्यचर्या कोड : MAHD - 04

पाठ्यचर्या का शीर्षक : हिन्दी साहित्य का इतिहास – I

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रशन का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भूमिका और महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रचित आध्यात्मिक साधना से सम्बन्धित साहित्य का परिचय दीजिए।
3. विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए भक्ति आन्दोलन के उदय की पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए।
4. निर्गुण कवि भगवद्प्रेम को मानव-जीवन की सार्थकता मानते हैं। इनकी भक्ति का मूल तत्त्व प्रेम-भाव है। एकनिष्ठता और मिलन की आतुरता निर्गुण काव्य-परम्परा में समभाव से सर्वत्र विद्यमान है। विभिन्न निर्गुण कवियों के काव्य में परमात्म-प्रेम की उत्कट विरह व्यंजना से सम्बन्धित काव्य का एक संकलन तैयार कीजिए।
5. हिन्दी सगुणभक्ति काव्य-परम्परा में तुलसीदास के अतिरिक्त अन्य कवियों के रामभक्ति विषयक काव्य का एक संकलन तैयार कीजिए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – V (विकल्प – 01)

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 05 **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

पंचम पाठ्यचर्या (वैकल्पिक)

विकल्प – 01

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 05

पाठ्यचर्या का शीर्षक : प्रयोजनमूलक हिन्दी

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. केन्द्र सरकार के किसी कार्यालय की राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की वस्तुस्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
2. हिन्दी समाचार-चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी-पारिभाषिक शब्दावली पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
3. राजभाषा आयोग, संसदीय राजभाषा समिति, राष्ट्रपति का आदेश, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प तथा राजभाषा नियम सम्बन्धी प्रावधानों का उल्लेख करते हुए राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को स्पष्ट कीजिए।
4. किसी राजभाषा / हिन्दी अधिकारी से हिन्दी-समारोह पर विमर्श कर एक रिपोर्ट बनाइए।
5. विषय-वस्तु की दृष्टि से अनुवाद का वर्गीकरण कीजिए।

*****

एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक – V (विकल्प – 02)

सत्रीय कार्य कोड : एम ए एच डी – 06 **अधिकतम अंक : 30%**

प्रथम सेमेस्टर

पंचम पाठ्यचर्या (वैकल्पिक)

विकल्प – 02

पाठ्यचर्या कोड : MAHD – 06

पाठ्यचर्या का शीर्षक : लोक-साहित्य

- **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1000 शब्दों में लिखिए।**
- **प्रत्येक प्रश्न के अधिकतम अंक 10 हैं।**

1. लोक कलाकार भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का शेक्सपियर भी कहा जाता है। किन्तु सच तो यह है कि जब भिखारी ठाकुर को शेक्सपियर की उपाधि दी जाती है तो इसमें मान शेक्सपियर का ही बढ़ता है। भिखारी ठाकुर के नाटक किन मायनों में अपेक्षाकृत श्रेष्ठ कहे जा सकते हैं ? तुलनात्मक विवेचन करते हुए भिखारी ठाकुर के नाटकों का वैशिष्ट्य प्रतिपादित कीजिए।
2. अपने क्षेत्र विशेष में प्रसिद्ध लोकनृत्य को विभिन्न श्रेणी-वर्ग में विभक्त करते हुए उनका परिचय दीजिए।
3. लोककथाओं के निर्माण में सहायक तत्त्वों का योगदान निरूपित कीजिए।
4. मुहावरे और लोकोक्तियाँ लोक की संस्कृति और अनुभूति को अपने में आत्मसात् किए हुए होती हैं। इस प्रकार के मुहावरों और लोकोक्तियों का एक संकलन तैयार कीजिए जिनमें लोक का दैनिक व्यवहार, आस्था, संस्कार और जीवनशैली का प्रतिबिम्ब स्पष्टतः दिखलाई पड़ता है।
5. अपनी बहुचर्चित आत्मकथा 'मुर्दहिया' में सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ॰ तुलसीराम का कथन है कि "एक रोचक बात यह थी कि इस तरह की सारी लोककलाएँ सिर्फ़ दलितों के बीच ही केन्द्रित थीं। सवर्ण जातियों में किसी तरह की लोककला मौजूद नहीं होती थी। शायद यही कारण था जिसके चलते इन कलाओं के साथ जातिसूचक विशेषण जुड़ गए थे जैसे – चमरउवा नाच या गाना, धोबियउवा नाच, कहैरउवा धुन, गोड़इता नाच (हूड़क के साथ) आदि।" क्या वाकई लोककलाओं के विकास एवं संरक्षण में आभिजात्य, सम्भ्रान्त एवं कुलीन वर्ग में मानी जाने वाली सवर्ण जातियों की अपेक्षा दलित एवं आदिवासी समुदाय का अधिक योगदान है ! गवेषणात्मक चिन्तन कीजिए और पर्याप्त प्रमाणों के साथ अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

*****

परिशिष्ट- 01

सत्रीय कार्य उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ का प्रारूप

....

›

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र – 442 001
फोन / फैक्स नं. : 07152-247146 वेबसाइट : http://hindivishwa.org/distance/

....

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम, प्रथम वर्ष – प्रथम सेमेस्टर, पाठ्यक्रम कोड : एम ए एच डी – 010

सत्रीय कार्य प्रश्नपत्र क्रमांक :

सत्रीय कार्य कोड :

पाठ्यचर्या क्रमांक :

पाठ्यचर्या का शीर्षक :

....

विद्यार्थी का नाम :

अनुक्रमांक :

नामांकन संख्या :

पत्राचार पता :

मोबाइल नं. :

ई-मेल :

....

सम्बन्धित अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता :

दिनांक :

स्थान :

विद्यार्थी के हस्ताक्षर :

*****